



शाला अनुभव कार्यक्रम:- दक्षतायुक्त शिक्षक निर्माण प्रक्रिया

शोधकर्ता

रोमेश कुमार जंधेल

शोधार्थी (शिक्षा)

कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय

भिलाई (छ.ग.)

शोध निर्देशक

डॉ. (श्रीमती) सुमित्रा मौर्य

सहायक प्राध्यापक (शिक्षा संकाय)

कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय

भिलाई (छ.ग.)

भूमिका

शिक्षक समाज का दर्पण और राष्ट्र निर्माता होता है। प्राचीन काल में भारत की गुरु-शिष्य परंपरा विश्व विख्यात थी, जहाँ नालंदा और तक्षशिला जैसे केंद्रों में वेदों, व्याकरण, गणित, साहित्य और खगोल विज्ञान की शिक्षा दी जाती थी। समय के साथ गुरुकुलों का स्थान विद्यालयों ने ले लिया, लेकिन शिक्षक का उत्तरदायित्व आज भी वही है जैसे भावी पीढ़ी के शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का सृजन करना एवं देश तथा समाज के लिए आदर्श एवं मूल्यवान नागरीक तैयार करना। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में, विशेषकर प्राथमिक स्तर पर, शिक्षक की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो गई है, क्योंकि प्राथमिक शिक्षा ही बालक के विकास की आधारशिला है। इसी अवस्था में मानव विकास की नींव बनती है, जो एक सभ्य एवं विकसित राष्ट्र की बुनियाद बनाती हैं। शिक्षा का अधिकार अधिनियम (RTE) 2009 और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 ने शिक्षक की दक्षता और प्रशिक्षण पर विशेष बल दिया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 ने प्रत्येक शिक्षक को सतत व्यवसायिक विकास के तहत प्रत्येक वर्ष लगभग 50 घंटे के अनिवार्य प्रशिक्षण की बात कही है ताकि शिक्षक वर्तमान समय के अनुकूल परिवर्तन को समझ सकें एवं विद्यार्थियों के समग्र विकास में सहायक हो सकें। शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान (जैसे DIET) डी.एल.एड. छात्राध्यापकों में वह व्यावसायिक कौशल विकसित करते हैं, जो उन्हें वास्तविक कक्षा शिक्षण की चुनौतियों के लिए तैयार करता है। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान सेवा पूर्व एवं सेवाकालीन प्रशिक्षण का आयोजन किया जाता है। सेवा पूर्व प्रशिक्षण के माध्यम से यह संस्थान छात्राध्यापकों में शिक्षकीय व्यवसायिक कौशल विकसित करने, शिक्षण में नवाचार करने, इस पेशे में आने वाली चुनौतियों को समझने तथा बाल विकास के अवधारणा को समझने एवं उसके अनुसार व्यवहारिक शिक्षण करने के योग्य बनाता है। सेवाकालीन प्रशिक्षण के माध्यम से यह संस्थान शिक्षकों को उनके अध्यापन

विषय के अलावा, नवाचार, अनुसंधान, बाल विकास तथा शिक्षण कौशल संबंधी प्रशिक्षण प्रदान करता है। यह शोध इस बात का विश्लेषण करता है कि सेवा पूर्व प्रशिक्षण के दौरान शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान द्वारा आयोजित की जाने वाली शाला अनुभव कार्यक्रम का छात्राध्यापकों के शिक्षण दक्षता पर क्या प्रभाव पड़ता है।

चरों की व्याख्या

■ शाला अनुभव कार्यक्रम

शाला अनुभव कार्यक्रम सेवापूर्व शिक्षक शिक्षा (D.El.Ed.) में आयोजित किया जाने वाला एक महत्वपूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रम है। इसमें प्रशिक्षु छात्राध्यापकों को कुछ समय के लिए किसी विद्यालय में जाकर वास्तविक शिक्षण का अनुभव प्राप्त करने और विद्यालय की गतिविधियों में सम्मिलित होने का अवसर दिया जाता है।

शाला अनुभव कार्यक्रम के द्वारा छात्राध्यापक विद्यालय में जाकर कक्षा शिक्षण, विद्यालय प्रबंधन, क्रियात्मक अनुसंधान, खेलकूद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन, पाठ योजना का निर्माण तथा अन्य शैक्षिक गतिविधियों में भाग लेकर व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करते हैं।

शाला अनुभव कार्यक्रम के प्रमुख उद्देश्य

1. छात्राध्यापकों को कक्षा शिक्षण में पढ़ाते हुए वास्तविक कक्षा शिक्षण का अनुभव प्राप्त करने तथा उसकी चुनौतियों एवं अवसर को पहचानने का अवसर प्रदान करना।
2. विद्यालय में रहते हुए उसके अनुशासन, क्रियाकलाप समाज के साथ संबंध आदि का व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त करना।
3. उम्र एवं कक्षा के अनुसार छात्राध्यापकों के मनोवैज्ञानिक एवं भावनात्मक विकास की समझ विकसित करना।
4. विभिन्न नवाचार, टीएलएम, सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग से शिक्षण को सरल बनाने की समझ विकसित करना।

■ शिक्षण दक्षता

शिक्षण दक्षता एक शिक्षक की वह व्यावहारिक योग्यता एवं कौशल है जिसमें विषय ज्ञान, संचार कौशल, शिक्षण विधि की जानकारी, बाल मनोविज्ञान की समझ, मूल्यांकन क्षमता, प्रबंधन कौशल एवं तकनीकी प्रयोग का समावेश होता है।

शिक्षण दक्षता एक व्यक्ति को छात्राध्यापकों के अनुकूल सुगम अधिगम वातावरण बनाने में सहायता प्रदान करत है। जिसमें शिक्षक प्रत्येक विषयवस्तु को छात्राध्यापकों की क्षमता एवं विषयवस्तु की मूल

धारणा के अनुसार प्रस्तुत करता है। जिसके लिए विविध तकनीको, दृश्य श्रव्य साधनों, सहायक शिक्षण सामग्री का प्रभावी उपयोग एवं प्रायोगिक ज्ञान प्रदान करना भी सम्मिलित होता है। इस सभी कार्यों को प्रभावी रूप से करने की क्षमता ही शिक्षण दक्षता का निर्माण करती हैं।

5.02 संबंधित शोध अध्ययन की समीक्षा

शिक्षण दक्षता से संबंधित अध्ययन

1. फातिमा और मट्टू (2024) ने पाया कि प्रभावी कक्षा प्रबंधन में पुरुष छात्र और पाठ योजना निर्माण में महिला छात्र अधिक दक्ष पाई गई।
2. शील (2024) ने अपने अध्ययन में पाया की शाला अनुभव के बाद छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता में महत्वपूर्ण एवं सकारात्मक परिवर्तन देखा गया। छात्राध्यापकों में शिक्षकीय पेशे के प्रति सकारात्मक सोचा एवं शिक्षण विधि के प्रयोग करने की क्षमता में वृद्धि पाया गया।
3. वर्मा और आदिल (2024) ने शिक्षकों के व्यावसायिक विकास और शिक्षण दक्षता पर के मध्य उच्च धनात्मक सहसंबंध पाया हैं।
4. गोड (2023) ने अध्ययन में पाया की प्राथमिक शिक्षकों की शिक्षण दक्षता पर प्रशिक्षण अवधि का सकारात्मक प्रभाव होता हैं।
5. कुकरेती और भट्ट (2023) के द्वारा शिक्षक की बुद्धि स्तर और उसकी शिक्षण दक्षता के बीच गहरा संबंध बताया पाया गया।
6. कुमार, नवीन (2022) के द्वारा उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन किया। इस अध्ययन में पाया गया कि महिला शिक्षकों की शिक्षण दक्षता पुरुष शिक्षकों से अधिक होता हैं।

शाला अनुभव कार्यक्रम से संबंधित शोध अध्ययन की समीक्षा

1. राणा (2023) ने अपने अध्ययन में पाया कि इंटरनशिप से छात्राध्यापकों आत्मविश्वास और कक्षा प्रबंधन में सुधार हुआ।
2. वशिष्ठ (2022) ने अपने अध्ययन में चिंतनशील शिक्षण और सृजनात्मकता के मध्य गहरा संबंध पाया।
3. झा (2022) ने के द्वारा सरकारी और निजी विश्वविद्यालयों के इंटरनशिप कार्यक्रमों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

4. गुप्ता (2022) ने अपने अध्ययन में पाया कि शाला अनुभव कार्यक्रम छात्राध्यापकों को वास्तविक शिक्षण चुनौतियों को समझने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम प्रदान करता है।
5. तिवारी (2022) के अध्ययन में शाला अनुभव गतिविधियों का प्रशिक्षुओं की दक्षता पर सकारात्मक प्रभाव पाया।
6. मेहता (2021) के द्वारा कक्षा नियंत्रण और शिक्षण प्रदर्शन के अंतर्संबंधों का अध्ययन किया गया एवं दोनों में उच्च धनात्मक संबंध पाया गया।

अध्ययन की आवश्यकता

प्राथमिक शिक्षा बच्चों के भविष्य के लिए सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है। यदि शिक्षक प्रशिक्षित और दक्ष नहीं होंगे, तो पूरी शिक्षा प्रणाली प्रभावित होगी। वर्तमान में छत्तीसगढ़ के डी.एल.एड. संस्थानों में सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ पाठ्य सहगामी क्रियाओं, शाला अनुभव कार्यक्रम और तकनीकी कुशलता का ज्ञान भी दिया जा रहा है। परन्तु इन क्रियाओं का भावी शिक्षकों पर कितना प्रभाव हो रहा है, क्या ये क्रियाओं उन्हें एक शिक्षक के लिए आवश्यक कुशलता प्रदान कर पा रही है, क्या छात्राध्यापक एक शिक्षकीय पेशे की चुनौती एवं अवसर का पहचान पा रहा है, इसका व्यवस्थित अध्ययन दुर्लभ था। इस कारण से शिक्षक प्रशिक्षार्थी जो आगे चलकर शिक्षण पेशे में आ सकते हैं उनकी शिक्षण दक्षता पर शाला अनुभव कार्यक्रम का क्या प्रभाव है इस पर अध्ययन किया जाना आवश्यक हो गया था।

समस्या कथन

शाला अनुभव कार्यक्रम:- दक्षतायुक्त शिक्षक निर्माण प्रक्रिया

प्रकार्यात्मक परिभाषाएँ

शिक्षण दक्षता – प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षण दक्षता से तात्पर्य बी.के. पासी और एम.एस. ललिता द्वारा निर्मित शिक्षण दक्षता मापनी (2001) को चयनित छात्राध्यापकों पर प्रशासित करने के उपरांत प्राप्त प्राप्तांकों से है, जिसमें कुल 21 पद हैं।

शाला अनुभव कार्यक्रम – प्रस्तुत अध्ययन में शाला अनुभव कार्यक्रम से तात्पर्य रोमेश कुमार जंघेल एवं सुमित्रा मौर्य द्वारा निर्मित शाला अनुभव कार्यक्रम प्रभावशीलता मापनी (2025) को चयनित छात्राध्यापकों पर प्रशासित करने के उपरांत प्राप्त प्राप्तांकों से है, जिसमें कुल 56 पद हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

1. डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की शाला अनुभव कार्यक्रम, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की शाला अनुभव कार्यक्रम के पहले आयाम शिक्षण योजना निर्माण, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन करना।
3. डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की शाला अनुभव कार्यक्रम के दूसरे आयाम कक्षा प्रबंधन, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन करना।
4. डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की शाला अनुभव कार्यक्रम के तीसरे आयाम विषय का ज्ञान, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन करना।
5. डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की शाला अनुभव कार्यक्रम के चौथे आयाम अंतर्वैयक्तिक संबंध, लिंग एवं संस्थान का मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।
6. डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की शाला अनुभव कार्यक्रम के पाँचवें आयाम शिक्षण अधिगम सामग्री निर्माण, लिंग एवं संस्थान का प्रभाव का अध्ययन करना।
7. डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के शाला अनुभव कार्यक्रम के छठवें आयाम समय प्रबंधन, लिंग एवं संस्थान का प्रभाव का अध्ययन करना।
8. डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की शाला अनुभव कार्यक्रम के सातवें आयाम अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया के समय मूल्यांकन, लिंग एवं संस्थान का प्रभाव का अध्ययन करना।
9. डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की शाला अनुभव कार्यक्रम के आठवें आयाम शाला अनुभव कार्यक्रम में गतिविधियों का क्रियान्वयन, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना:—अनुसंधान कार्य के संचालन के लिए परिकल्पना का निर्माण करना आवश्यक है।

1. डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की शाला अनुभव कार्यक्रम, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।
2. डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की शाला अनुभव कार्यक्रम के पहले आयाम शिक्षण योजना निर्माण, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।
3. डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की शाला अनुभव कार्यक्रम के दूसरे आयाम कक्षा प्रबंधन, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।
4. डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की शाला अनुभव कार्यक्रम के तीसरे आयाम विषय का ज्ञान, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।

5. डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की शाला अनुभव कार्यक्रम के चौथे आयाम अंतर्वैयक्तिक संबंध, लिंग एवं संस्थान का मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।
6. डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की शाला अनुभव कार्यक्रम के पाँचवें आयाम शिक्षण अधिगम सामग्री निर्माण, लिंग एवं संस्थान का मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।
7. डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के शाला अनुभव कार्यक्रम के छठवें आयाम समय प्रबंधन, लिंग एवं संस्थान का मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।
8. डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की शाला अनुभव कार्यक्रम के सातवें आयाम अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया के समय मूल्यांकन, लिंग एवं संस्थान का मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।
9. डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की शाला अनुभव कार्यक्रम के आठवें आयाम शाला अनुभव कार्यक्रम में गतिविधियों का क्रियान्वयन, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य एवं अंतः क्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।

अध्ययन की परिसीमाएँ

- प्रस्तुत शोध अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के पाँचों संभाग से 10 शासकीय शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान (DIET) तथा 10 निजी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान में अध्ययनरत डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष के छात्राध्यापकों तक परिसीमित है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन शासकीय शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान (DIET) से 200 पुरुष छात्राध्यापकों एवं 200 महिला छात्राध्यापकों तथा निजी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान से 200 पुरुष छात्राध्यापकों एवं 200 महिला छात्राध्यापकों तक परिसीमित है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन कुल 800 छात्राध्यापकों के अध्ययन तक परिसीमित है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के पाठ्य सहगामी अभिवृत्ति, शाला अनुभव कार्यक्रम तथा सूचना प्रौद्योगिकी अभिवृत्ति का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव तक परिसीमित है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन में बी.के. पासी और एम.एस. ललिता द्वारा निर्मित शिक्षण दक्षता मापनी (2001), तथा रोमेश कुमार जंधेल एवं सुमित्रा मौर्य के द्वारा निर्मित शाला अनुभव कार्यक्रम प्रभावशीलता मापनी (2025) तक परिसीमित है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध में अध्ययन के लिए वर्णनात्मक अनुसंधान विधि के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

जनसंख्या

छत्तीसगढ़ राज्य में कुल संचालित शासकीय जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान तथा निजी डी.एल.एड. प्रशिक्षण में अध्ययनरत छात्र इस अनुसंधान की जनसंख्या है। इसके लिए संपूर्ण छत्तीसगढ़ अध्ययनरत 6620 छात्राध्यापकों को जनसंख्या के लिए लिया गया।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में गैर अनुपातिक स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्शन विधि का उपयोग कर 400 पुरुष तथा 400 महिला छात्राध्यापकों को न्यादर्श

शोध अभिकल्प :-प्रस्तुत अनुसंधान हेतु शोध अभिकल्प निम्नानुसार प्रस्तुत हैं –

शोध अभिकल्प

स्वतंत्र चर	आश्रित चर
शाला अनुभव कार्यक्रम 1. शिक्षण योजना निर्माण 2. कक्षा प्रबंधन 3. विषय का ज्ञान 4. अंतर्वैयक्तिकसंबंध 5. शिक्षण अधिगम सामाग्री का निर्माण 6. समय प्रबंधन 7. अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया एवं उपयोग 8. शाला अनुभव कार्यक्रम में गतिविधियों का क्रियान्वयन	शिक्षण दक्षता 1. योजना बनाना 2. प्रस्तुतीकरण 3. पाठ का समापन 4. मूल्यांकन 5. प्रबंधकीय कार्य
लिंग 1. पुरुष छात्राध्यापक 2. महिला छात्राध्यापक	
संस्थान 1. शासकीय शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान 2. निजी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान	

शोध उपकरण

शोध कार्य में प्रयुक्त उपकरण

क्र	मापनी का नाम	निर्माणकर्ता	आयाम
शिक्षण दक्षता	सामान्य शिक्षण दक्षता मापनी (1994)	डॉ.बी.के. पासी और एम.एस. ललिता	---
शाला अनुभव कार्यक्रम प्रभावशीलता	शाला अनुभव कार्यक्रम प्रभावशीलता मापनी	स्वनिर्मित	1. शिक्षण योजना निर्माण 2. कक्षा प्रबंधन 3. विषय का ज्ञान 4. अंतर्वैयक्तिकसंबंध 5. शिक्षण अधिगम सामाग्री का निर्माण 6. समय प्रबंधन 7. अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया एवं उपयोग 8. शाला अनुभव कार्यक्रम में गतिविधियों का क्रियान्वयन

सांख्यिकीय विश्लेषण

प्रस्तुत अनुसंधान में उद्देश्यों तथा परिकल्पनाओं के निर्माण करने के बाद आंकड़ों का संकलन उपकरणों की सहायता से किया गया। अंतःक्रियात्मक परिकल्पनाओं की जाँच के लिये सांख्यिकीय के रूप में (2x2x2) प्रसरण विश्लेषण (F) का उपयोग किया गया।

परिकल्पना की समग्र समीक्षात्मक व्याख्या

डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के शाला अनुभव कार्यक्रम, संस्थान एवं लिंग का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन
 डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के शाला अनुभव कार्यक्रम के मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव, संस्थान एवं लिंग का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव का प्रसरण विश्लेषण सारांश (समग्र)

प्रसरण का स्रोत	शाला अनुभव कार्यक्रम	पहले आयाम शिक्षण योजना निर्माण	दूसरे आयाम कक्षा प्रबंधन	तीसरे आयाम विषय ज्ञान	चौथे आयाम अंतर्वैयक्तिक संबंध	पाँचवे आयाम शिक्षण अधिगम सामग्री निर्माण	छठवे आयाम समय प्रबंधन	सातवें आयाम अध्यापन प्रक्रिया के समय मूल्यांकन	आठवें आयाम गतिविधियों का क्रियान्वयन
-----------------	----------------------	--------------------------------	--------------------------	-----------------------	-------------------------------	--	-----------------------	--	--------------------------------------

शाला अनुभव कार्यक्रम एवं आयाम	13.632 **	12.131**	8.246**	9.817**	16.061**	15.312**	17.551**	10.115**	9.427**
संस्थान	8.669 **	8.681**	4.429*	3.816*	8.210*	9.702**	13.263**	8.059**	5.782*
थलंग	4.249 *	5.848*	1.896	4.391*	6.551*	3.504	3.112	3.502	3.402
शाला अनुभव कार्यक्रम X संस्थान	5.276 *	3.493	1.991	2.164	2.711	4.854*	5.454*	4.798 *	1.048
शाला अनुभव कार्यक्रम X लिंग	2.733	8.136**	3.188	3.871*	5.108*	3.536	2.886	3.401	4.407*
शाला प्रकार X लिंग	3.371	2.691	1.931	2.058	3.726	2.099	3.181	2.756	2.772
शाला अनुभव कार्यक्रम X संस्थान X लिंग	2.951	1.973	2.335	2.967	2.848	2.653	2.642	2.203	2.626
• = सार्थक नहीं ** = 0.01 - सार्थकता स्तर * = 0.05 – सार्थकता स्तर									

शाला अनुभव कार्यक्रम प्रभाव

- मुख्य प्रभाव – शाला अनुभव कार्यक्रम का शिक्षण दक्षता पर अत्यंत सार्थक मुख्य प्रभाव पाया गया।

संभावित कारण – इसका कारण 18 सप्ताह का वास्तविक कक्षा अनुभव है। प्रशिक्षु जब वास्तविक स्कूल में पढ़ाते हैं, तो वे कक्षा प्रबंधन, समय प्रबंधन और छात्राध्यापकों के मनोविज्ञान को गहराई से समझते हैं, जो कि केवल सैद्धांतिक ज्ञान से संभव नहीं है।

- अंतःक्रियात्मक प्रभाव – शाला अनुभव कार्यक्रम और संस्थान के प्रकार के बीच सार्थक अंतःक्रिया देखी गई।

संभावित कारण – इसका कारण यह हो सकता है कि डायट संस्थानों द्वारा इंटर्नशिप के दौरान दी जाने वाली नियमित प्रतिपुष्टि और मार्गदर्शन अधिक प्रभावी होता है, जिससे प्रशिक्षुओं के व्यावहारिक कौशल में निजी संस्थानों की तुलना में अधिक सुधार होता है।

परिणाम

प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त परिणामों को परिकल्पना के क्रमानुसार प्रस्तुत किया गया है।

- डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के शाला अनुभव कार्यक्रम, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।

परिणाम

- शिक्षण दक्षता पर शाला अनुभव कार्यक्रम, संस्थान एवं लिंग का अलग अलग मुख्य प्रभाव सार्थक पाया गया।

2. केवल शाला अनुभव कार्यक्रम एवं संस्थान के मध्य अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक पाया गया।
3. अन्य सभी द्विमार्गीय अंतःक्रिया प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।
4. शासकीय संस्थानों के छात्राध्यापक अपेक्षाकृत अधिक दक्ष पाए गए।
5. महिला छात्राध्यापक पुरुष छात्राध्यापकों की तुलना में थोड़े. अधिक दक्ष पाए गए।

2. **डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के शाला अनुभव कार्यक्रम के पहले आयाम शिक्षण योजना निर्माण, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।**

परिणाम

1. शिक्षण योजना निर्माण, संस्थान एवं लिंग का अलग अलग मुख्य प्रभाव सार्थक पाया गया।
2. केवल शिक्षण योजना निर्माण एवं लिंग के मध्य अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक पाया गया।
3. अन्य सभी द्विमार्गीय अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।
4. शासकीय संस्थानों के छात्राध्यापक अपेक्षाकृत अधिक दक्ष पाए गए।
5. महिला छात्राध्यापक पुरुष छात्राध्यापकों की तुलना में थोड़े. अधिक दक्ष पाए गए।
3. **डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के शाला अनुभव कार्यक्रम के दूसरे आयाम कक्षा प्रबंधन, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।**
 - कक्षा प्रबंधन एवं संस्थान का छात्राध्यापकों के शिक्षण दक्षता पर सार्थक प्रभाव पाया गया।
 - लिंग का शिक्षण दक्षता पर मुख्य प्रभाव सार्थक पाया गया।
 - किसी भी दो चरों के अंतःक्रिया का प्रभाव शिक्षण दक्षता पर सार्थक नहीं पाया गया।
4. **डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के शाला अनुभव कार्यक्रम के तीसरे आयाम विषय का ज्ञान, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।**
 1. विषय ज्ञान, संस्थान एवं लिंग का अलग अलग मुख्य प्रभाव सार्थक पाया गया।
 2. केवल विषय ज्ञान एवं लिंग के मध्य अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक पाया गया।
 3. अन्य सभी द्विमार्गीय अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।
 4. शासकीय संस्थानों के छात्राध्यापकों का विषय ज्ञान अपेक्षाकृत उच्च पाया गया।
5. **डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के शाला अनुभव कार्यक्रम के चौथे आयाम अंतर्वैयक्तिक संबंध, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।**
 1. अंतर्वैयक्तिक संबंध, संस्थान एवं लिंग का अलग अलग मुख्य प्रभाव सार्थक पाया गया।
 2. केवल अंतर्वैयक्तिक संबंध एवं लिंग के मध्य अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक पाया गया।

3. अन्य सभी द्विमार्गीय अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।
4. शासकीय संस्थानों के छात्राध्यापकों का अंतर्वैयक्तिक संबंध अपेक्षाकृत उच्च पाया गया।
5. डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के शाला अनुभव कार्यक्रम के पाँचवे आयाम शिक्षण अधिगम सामग्री निर्माण, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।
 1. शिक्षण सहायक सामग्री निर्माण तथा संस्थान का अलग अलग मुख्य प्रभाव सार्थक पाया गया।
 2. केवल शिक्षण सहायक सामग्री निर्माण एवं संस्थान के मध्य अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक पाया गया।
 3. अन्य सभी द्विमार्गीय अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।
 4. शासकीय संस्थानों के छात्राध्यापकों का शिक्षण सहायक सामग्री निर्माण अपेक्षाकृत उच्च पाया गया।
6. डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के शाला अनुभव कार्यक्रम के छठवे आयाम समय प्रबंधन, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।
 1. समय प्रबंधन तथा संस्थान का अलग अलग मुख्य प्रभाव सार्थक पाया गया।
 2. केवल समय प्रबंधन एवं संस्थान के मध्य अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक पाया गया।
 3. अन्य सभी द्विमार्गीय अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।
 4. शासकीय संस्थानों के छात्राध्यापकों का समय प्रबंधन क्षमता अपेक्षाकृत उच्च पाया गया।
7. डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के शाला अनुभव कार्यक्रम के सातवें आयाम अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया के समय मूल्यांकन, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।
 1. अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया के समय मूल्यांकन तथा संस्थान का अलग अलग मुख्य प्रभाव सार्थक पाया गया।
 2. केवल अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया के समय मूल्यांकन एवं संस्थान के मध्य अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक पाया गया।
 3. अन्य सभी द्विमार्गीय अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।
 4. शासकीय संस्थानों के छात्राध्यापकों का अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया के समय मूल्यांकन क्षमता अपेक्षाकृत उच्च पाया गया।
8. डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के शाला अनुभव कार्यक्रम के आठवें आयाम गतिविधियों का क्रियान्वयन, लिंग एवं संस्थान का शिक्षण दक्षता पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया जाएगा।
 1. गतिविधियों का क्रियान्वयन तथा संस्थान का अलग अलग मुख्य प्रभाव सार्थक पाया गया।

2. केवल गतिविधियों का क्रियान्वयन एवं संस्थान के मध्य अंतःक्रियात्मक का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव सार्थक पाया गया।
3. अन्य सभी द्विमार्गीय अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।
4. शासकीय संस्थानों के छात्राध्यापकों का गतिविधियों का क्रियान्वयन क्षमता अपेक्षाकृत उच्च पाया गया।
5. पुरुष छात्राध्यापकों का गतिविधियों का क्रियान्वयन क्षमता महिला छात्राध्यापकों से अधिक पाया गया।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए:-

छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता पर शाला अनुभव कार्यक्रम का सार्थक प्रभाव पाया गया। 18 सप्ताह के वास्तविक विद्यालयी अनुभव ने शिक्षण कौशल विकसित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

- छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता पर संस्थान के प्रकार का सार्थक प्रभाव पाया गया। शासकीय प्रशिक्षण संस्थानों के छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता, निजी संस्थानों के छात्राध्यापकों से उच्च पाई गई।
- छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता पर लिंग का कोई सार्थक मुख्य प्रभाव नहीं पाया गया।
- शिक्षण दक्षता पर शाला अनुभव कार्यक्रम × संस्थान के प्रकार के मध्य सार्थक अंतःक्रियात्मक प्रभाव पाया गया।
- शिक्षण दक्षता पर शाला अनुभव कार्यक्रम के सभी आठ आयामों (शिक्षण योजना निर्माण, कक्षा प्रबंधन, विषय ज्ञान, अंतर्वैयक्तिक संबंध, TLM निर्माण, समय प्रबंधन, मूल्यांकन और गतिविधियों का क्रियान्वयन) का सार्थक मुख्य प्रभाव पाया गया।
- शिक्षण दक्षता पर शाला अनुभव कार्यक्रम के आयाम 'शिक्षण योजना निर्माण', 'विषय ज्ञान', 'अंतर्वैयक्तिक संबंध' और 'गतिविधियों का क्रियान्वयन' एवं लिंग की सार्थक अंतःक्रिया पाई गई।

शैक्षिक उपादेयता

यह अनुसंधान प्राथमिक शिक्षा और शिक्षक प्रशिक्षण के क्षेत्र में निम्नलिखित रूप में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा

—

यह अध्ययन इस तथ्य को सुस्पष्ट रूप से प्रतिपादित करता है कि डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के प्रकारों के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वे पाठ्य सहगामी गतिविधियों को केवल अनुपूरक न मानकर प्रशिक्षण प्रक्रिया के अभिन्न एवं अनिवार्य घटक के रूप में समाविष्ट करें।

अध्ययन के परिणाम यह इंगित करते हैं कि शाला अनुभव कार्यक्रम छात्राध्यापकों के शिक्षण दक्षता की प्रक्रिया को सुदृढ़ करता है तथा उन्हें यथार्थ कक्षा परिस्थितियों में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के व्यावहारिक आयामों से अवगत कराता है। अतः इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन में वैज्ञानिक योजना, सतत पर्यवेक्षण तथा बहुआयामी मूल्यांकन तंत्र को समाविष्ट किया जाना अत्यंत आवश्यक है।

प्रस्तुत अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि छात्राध्यापकों में सकारात्मक व्यवसायिक अभिवृत्ति का विकास शिक्षण दक्षता के संवर्धन हेतु आवश्यक है। अतः शिक्षक प्रशिक्षकों को एक सशक्त प्रेरक एवं मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हुए छात्राध्यापकों में नवाचारपरक, चिंतनशील तथा तकनीकी उन्मुख दृष्टिकोण का संवर्धन करना चाहिए।

अंततः यह अध्ययन गुणवत्तापूर्ण शिक्षक निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण शैक्षिक हस्तक्षेप के रूप में परिलक्षित होता है, जो न केवल छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता को सुदृढ़ करता है, बल्कि विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता, अधिगम परिणामों एवं समग्र शैक्षिक प्रभावशीलता में भी अभिवृद्धि सुनिश्चित करने की दिशा में सार्थक योगदान प्रदान करता है।

सुझाव

प्रस्तुत शोध कार्य में अध्ययन के उपरान्त निम्न सुझाव किये गये हैं –

शाला अनुभव की गंभीरता: 18 सप्ताह के शाला अनुभव कार्यक्रम को एक औपचारिक कार्य न मानकर वास्तविक शिक्षण कौशल सीखने के अवसर के रूप में लेना चाहिए।

शिक्षकों (शिक्षक-प्रशिक्षकों) के लिए सुझाव

नियमित प्रतिपुष्टि: शाला अनुभव कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षुओं को निरंतर फीडबैक और मार्गदर्शन प्रदान करना चाहिए ताकि वे अपनी शिक्षण विधियों में सुधार कर सकें।

पालकों (अभिभावकों) के लिए सुझाव

शासकीय संस्थानों पर विश्वास: अनुसंधान बताता है कि शासकीय जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIET) दक्षता निर्माण में अधिक प्रभावी हैं, अतः पालकों को शासकीय शिक्षा प्रणाली के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखना चाहिए।

प्रशासकों और नीति-निर्धारकों के लिए सुझाव

संसाधन उपलब्ध कराना: प्रशासकों को सभी संस्थानों में आधुनिक IT लैब और सांस्कृतिक मंचों के लिए पर्याप्त बजट और संसाधन उपलब्ध कराने चाहिए।

अनुकरणीय अध्ययन

भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए इस अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित क्षेत्रों में शोध की संभावनाएँ बनती हैं:

1. डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की व्यवसायिक अभिवृत्ति, आत्मप्रभावकारिता एवं शिक्षण अभिप्रेरणा का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन।
2. डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के शैक्षिक अभिवृत्ति, अधिगम शैली एवं शाला अनुभव कार्यक्रम का शिक्षण दक्षता पर तुलनात्मक अध्ययन।
3. डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता, तनाव प्रबंधन एवं शाला अनुभव का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन।
4. शिक्षक प्रशिक्षुओं के माइक्रो-टिचींग कौशल, पाठ योजना निर्माण एवं आईसीटी उपयोग का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन।
5. दूरस्थ माध्यम के डी.एल.एड. छात्राध्यापकों एवं नियमित माध्यम के डी.एल.एड. छात्राध्यापकों के शिक्षण दक्षता पर शाला अनुभव कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. Fatima, N., & Mattu, M. I. (2024). Study of teaching competency of higher secondary school teachers on the basis of gender. *Education Administration Journal*, 30(1), 3020–3027.
2. Sheel, S. (2024). *Effectiveness of D.El.Ed. curriculum in West Bengal* (Doctoral dissertation). Sikkim Skill University.
3. God, R. (2023). *Comparative study of teaching competency and teaching effectiveness of primary school teachers in relation to teacher training programs* (Doctoral dissertation). Chaudhary Charan Singh University.
4. Neeraj. (2023). *Attitude of teacher educators towards ICT tools in Varanasi district* (Doctoral dissertation). V.B.S. Purvanchal University.
5. Rana, N. (2023). *Analytical study of school experience program in elementary teacher education* (Doctoral dissertation). Jamia Millia Islamia University.
6. Das, R. (2022). *Evaluation of school experience program in teacher training institutions of Assam* (Doctoral dissertation). Tezpur University.
7. Jha, S. K. (2022). *Critical study of internship in teacher training colleges* (Doctoral dissertation). Babasaheb Bhimrao Ambedkar Bihar University.

8. Tiwari, P. (2022). *Impact of school experience program activities on teaching competency of pupil teachers* (Doctoral dissertation). Barkatullah University.
9. Vashistha, P. (2022). *Effect of reflective teaching practices on decision-making, problem-solving, and creativity of pupil teachers* (Doctoral dissertation). K.R. Mangalam University.
10. Bhatnagar, A. (2021). *Study of relationship between time management and teaching competency of pupil teachers* (Doctoral dissertation). Barkatullah University.
11. Mehta, S. (2021). *Classroom management skills and teaching performance of pupil teachers* (Unpublished dissertation). Government College of Education, Bhopal.
12. Sharma, M. K. (2021). Comparative study of pupil teachers' attitude towards information technology in teacher education. *International Journal of Education and Modern Management*, 3(4), 3–4.
13. Yadav, S. P. (2021). *Comparative evaluation of government and private D.El.Ed. institutions in Chhattisgarh* (Doctoral dissertation). Pt. Sundarlal Sharma University.
14. Chauhan, M. (2020). Impact of interpersonal relationship skills on teaching quality of pupil teachers. *Indian Journal of Educational Research*, 22(4), 45–52.
15. Sharma, N. (2020). *Impact of teaching competency on achievement, motivation, and creativity of students* (Doctoral dissertation).
16. Verma, R. (2020). *Impact of institutional clubs on pupil teachers* (Doctoral dissertation). University of Allahabad.